भारत-नेपाल संबंध : एक सिंहावलोकन

बीज शब्द : भारत नेपाल संबंध, राजनैतिक इतिहास, प्राचीन नेपाल, वैदिक युग में नेपाल

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

भारत-नेपाल संबंध प्रचीन काल से ही जीवंत रहे है। भारत नेपाल के संबंध राजनीतिक से अधिक सांस्कृतिक हैं । किन्तु दोनों देशो के पारस्परिक राजनैतिक संबंधों मे प्राचीन काल से लेकर आज तक किस प्रकार परिवर्तन आते रहे हैं और दोनों देशों के मध्य राजनीतिज्ञों की नीति एवं वैचारिक गतिशीलता किस प्रकार की भूमिका का निर्वाह करती है इसके आलोक में प्रस्तुत शोध आलेख भारत-नेपाल संबंधों का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करता है।

सतीश चन्द्र मित्तल
सेवानिवृत्त प्रो.,इतिहास विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

प्राचीन काल से भारत- नेपाल के संबंध अटूट रहे हैं। जब से सूर्य की प्रथम किरणों ने भारत-नेपाल भूमि का स्पर्श किया, भारत नेपाल के लोगों ने कभी भी यह अनुभव नहीं किया कि वे दो हैं। नेपाल भारत का केवल एक पड़ोसी ही नहीं और न ही वह भारत व चीन के बीच कोई 'बफर' राज्य है, बल्कि दोनों एक परिवार के हिस्से हैं, सगे भाई हैं। दोनों ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक, दृढ़ संबंधों से जुड़े हैं।[1] हिमालय की दक्षिण ढलान पर बसा यह एक छोटा सा देश 147181 वर्ग किलोमीटर में फैला तथा वर्तमान में 2 करोड़ 90 लाख की जनसंख्या वाला देश है। यह 2006 तक विश्व में एक मात्र हिन्दू राष्ट्र के रूप में माना गया है।[2] प्रशासनिक दृष्टि से यह 75 जिलों तथा 14 अंचलों में बंटा है।[3]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

वैदिक युग से नेपाल भारत से अभिन्न रूप से जुड़ा है। पौराणिक रूप से यह मान्यता है कि निमि नाम के एक मनीषी ने इस क्षेत्र की स्थापना की थी। कालान्तर में इसे 'निमिना पालित राष्ट्र नेपालम' कहा गया। रामायण काल में यहीं, जनकपुरी के राजा क्षीरध्वज ने अपनी पुत्री सीता का विवाह, अयोध्या के राजकुमार श्री राम से किया। क्षीरध्वज के छोटे भाई कुशध्वज ने अपनी बेटी उर्मिला का विवाह राम के छोटे भाई लक्ष्मण के साथ किया। विद्वानों ने भारतीय स्त्री चरित्र को माँ सीता के चरित्र से उत्पन्न बताया है तथा उनका चरित्र 'पवित्रता से भी पवित्र'[4] बताया तथा उर्मिला के त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।[5] महाभारत काल में यहाँ के युवाओं ने महायुद्ध में, पांडवों की ओर से भाग लिया था। यहीं पर महात्मा बुद्ध का लुम्बिनी में जन्म हुआ था। पाँचवी शताब्दी ई.पू. काठमाण्डू की सुरम्य घाटी में गोपाल, कीरत, लिच्छवी आदि छोटे-छोटे राज्य थे। चाणक्य ने नेपाल का जिक्र किया है। मौर्य वंश के सम्राट अशोक की एक पुत्री का विवाह नेपाल के पर्वतीय क्षेत्र के एक सम्राट परिवार के व्यक्ति से हुआ तथा उसका साम्राज्य नेपाल तक था।[6] गुप्त शासक समुद्रगुप्त के साम्राज्य में नेपाल का राज्य भी था।[7] हर्षचरित्र से ज्ञात होता है कि उसने किसी लुखारध्वज, पर्वतीय प्रदेश से कर ग्रहण किया था। ऐसा भी माना जाता है कि नेपाल के राजा ने हर्ष से मित्रता स्थापित की थी तथा उपहारस्वरूप बहुत सा धन भेजा था।[8] प्रसिद्ध इतिहासकार के. एम. पाण्णिकर के अनुसार हर्ष के साम्राज्य में नेपाल भी सम्मिलित था जबकि राधा कुमुद मुखर्जी के अनुसार नेपाल उसके प्रभाव क्षेत्र में था।[9] चीनी सूत्रों से ज्ञात होता है कि हर्षवर्धन का समकालीन चीनी तांग शासक ताई सुंग ने दो दूत मण्डल, क्रमशः 643 ई. तथा 647 में भेजे। दूसरे दूतमंडल

के पहुँचने के समय हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई थी तथा एक अयोग्य व्यक्ति ने शासन पर कब्जा कर लिया था। उस दूसरे दूतमण्डल ने नेपाल तथा असम से एक सेना खड़ी कर हर्षवर्धन के समर्थकों ने उस अयोग्य शासक को पराजित किया था तथा उसकी मदद की थी।[10] 9वीं शताब्दी में प्राकृतिक अड़चनों तथा कठिनाइयों में नेपाल छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया था। 878 ई. में नेपाल का तिब्बत से टकराव के बाद नेपाल एक स्वतंत्र देश के रूप में उभरा था।[11] भारत तथा चीन के बीच व्यापार का प्रमुख मार्ग होने से उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधरी थी। 11वीं शताब्दी में गुणाकामदेव नामक शासक ने काठमाण्डू, पाटन, शंकु नगरों में निर्माण किया था।[12] उल्लेखनीय है कि पड़ोसी क्षेत्र कश्मीर, 14वीं शताब्दी में तुर्की आक्रमण का शिकार बना जबकि नेपाल किसी विदेशी शासन द्वारा विजित न हुआ। नेपाल इस्लामीकरण से पूर्णत: अछूता रहा।

1559 ई. में एक राजपूत ध्रुवसेन ने यहाँ शाहवंश की स्थापना की। उसने गोरखों के पर्वतीय प्रदेश (काठमाण्डू) के पश्चिम क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। उसके उत्तराधिकारियों ने नेपाल के मध्य क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। 1769 ई. में गोरखा राजा पृथ्वी नारायण शाह ने काठमाण्डू पर अधिकार कर तथा वहाँ पर लम्बे समय से रह रहे मल्ल राजाओं को पराजित कर संयुक्त नेपाली साम्राज्य की स्थापना की।

ब्रिटिश राज तथा नेपाल-

राजनैतिक दृष्टि से नेपाल में राजतन्त्र पंचायती तथा जनतंत्रात्मक ब्रिटिश शासन पद्धतियों का समय-समय पर प्रयोग हुआ। 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में शासन का स्वरूप राजतंत्रात्मक रहा। 1803 ई. में नेपाल द्वारा सीमा के साथ लगे छोटे-छोटे भारत के पर्वतीय राज्यों को जीतने के प्रयत्न हुए। नेपाल के सेनापति अमर सिंह थापा ने 1803-1814 तक कई संघर्ष किये। उसने विशाल गोरखा राज्य की स्थापना का प्रयत्न किया। तत्कालीन राजनैतिक परस्थितियों तथा पहाड़ी राजाओं के परस्पर द्वेष तथा ईर्ष्या का लाभ उठाते हुए, वह 1803 ई. में गढ़वाल क्षेत्र के देहरादून तक पहुँच गया।[13] 1804 ई. में उसने विलासपुर (कहलूर) चम्बा तथा कांगड़ा के आस-पास के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। एक प्रसिद्ध यात्री के अनुसार[14] चम्बा तथा कांगड़ा के राजा ससांरचन्द के अधीन शासकों ने अमर सिंह थापा को आने का निमन्त्रण दिया था। 1806 ई. की महामारी की लड़ाई के बाद उसकी गोरखा सेनाओं ने कांगड़ा दुर्ग को भी घेर लिया था। संसारचन्द ने दु:खी होकर पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह से मदद माँगी थी। महाराज रणजीत सिंह ने उसकी सहायता की। उन्होंने कांगड़ा के आस-पास का क्षेत्र उसे दिया परन्तु कांगड़ा का दुर्ग अपने अधिकार में रखा।[15] 1810-1814 के दौरान अमर सिंह थापा की सेना ने हिण्डुर, जुवाल, धार्मा, ठियोंग, बालसन, कोटगढ़, रामपुर आदि को अपना प्रभुत्व स्वीकार करने के लिए मजबूर किया।

अमर सिंह थापा ने अर्की को केन्द्र मानकर ईस्ट इंडिया कम्पनी के संरक्षित क्षेत्रों सरहिन्द तथा पटियाला पर भी अपना आधिपत्य चाहा। अत: उसका टकराव कम्पनी के मेजर डेविड आक्टरलीनी के साथ हुआ। यह भयंकर संघर्ष मार्च 1816 ई. में सागोली की प्रसिद्ध संधि से समाप्त हुआ।[16] इससे अमर सिंह थापा को कुछ जीते हुए प्रदेश वापस करने पड़े, गोगरा के पश्चिम तथा पूर्व में सिक्किम से हटना पड़ा। गोरखे, काठमाण्डू में एक ब्रिटिश रेजीडेन्ट रखने को तैयार हुए। इस महत्वपूर्ण सफलता के लिए भारत के गवर्नर जनरल लार्ड मोईरा को 'मारक्यूस ऑफ हेस्टिंग' की उपाधि देकर बनाया गया।[17] 1846 ई. में एक नेपाली सैनिक अधिकारी राणा जंग बहादुर ने प्रधानमंत्री पद सम्भाल कर, समस्त वास्तविक शक्ति अपने में केन्द्रित की। अपना पद परम्परागत तथा वंशानुगत किया। इसी काल में भारत में 1857 ई. में महासंग्राम हुआ था। इस संघर्ष में नेपाल राज्य की भूमिका अनेक ब्रिटिश वफादार रजवाड़ों से भिन्न रही। राणा यद्यपि अपना राज्य बचाये रखना चाहता था, उसकी नेपाल दरबार तथा नेपाल की जनता की पूरी सहानुभूति भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के साथ थी। तत्कालीन लखनऊ के ब्रिटिश रेजीडेन्ट सर हेनरी मोण्टगुमरी लारेंस का पत्र व्यवहार इस पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।[18] उदाहरणस्वरूप, 2 मई 1857 ई. के एक पत्र में लारेंस ने भारत के गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग को लिखा कि गत वर्ष मैने राणा जंग बहादुर से काठमाण्डू से 1000 वालियन्टर मांगे जो एक सप्ताह में ही पहुँच गये पर अब 34वीं तथा 19वीं गोरखा सेना आसानी से प्राप्त नहीं है।[19] 29 मई को पुन: उसने लिखा कि समय की माँग पर नेपाल ने अपनी सैनिक सहायता न भेजी।[20] एक अन्य पत्र में लिखा कि गोरखे, गौरव तथा राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा को ज्यादा महत्व देते हैं।[21] इतना ही नहीं 'क्रांति' के महानायक नाना साहेब जीवन के अन्तिम क्षण तक अंग्रेजों के हाथ न लगे सके थे। वे अप्रैल 1859 ई. में नेपाल चले गए थे।[22] अंग्रेजों ने स्थान-स्थान पर उनको पकड़ने के लिए छापे भी मारे।[23] अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने के लिए पहले पाँच हजार रुपया का इनाम घोषित किया तथा बाद में जनरल आउटरम ने यह राशि एक लाख रूपयों कर दी थी। एक प्रसिद्ध इतिहासकार[24] के अनुसार नाना साहेब तथा अजीमुल्ला की मृत्यु नेपाल की तराई में मलेरिया में हुई थी। मृत्यु के समय नाना साहेब की पत्नी, बाला की पत्नी, बाजीराव की दो विधवायें तथा एक पुत्री भी उपस्थित थी। एक अन्य इतिहासकार[25] ने भी इसकी पुष्टि करते लिखा कि नाना साहेब के साथ उनका परिवार तथा अन्य 40 महिलाएं थीं। काठमाण्डू में प्रचलित है कि नाना साहेब की धर्मपत्नी को राणा जंग बहादुर ने अपने महल के निकट उद्यान

में शरण दी थी।[26] इसी प्रकार के नेपाल के साथ लखनऊ की बेगम हजरत महल के बारे में कहा जाता है। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह को 4 फरवरी 1856 ई. को पद से हटा दिया गया था तथा कैद कर कोलकाता के फोर्ट विलियम में रखा गया। पर उनकी और बेगम हजरत महल का संघर्ष चलता रहा। नेपाल में वह भी अपने सैकड़ों क्रांतिकारियों के साथ पहुँची थी। 1874 ई. में वह काठमाण्डू में मरीं।[27] 1857 ई. के संघर्ष में नेपाल के सहयोग देने से, उसे अंग्रेजों के कोप का भाजन होना पड़ा। नेपाल के आराध्य गुरु गोरखनाथ की साधना भूमि को अंग्रेजों ने अपने अधिकार में ले लिया पर सामान्यत: सीधे ब्रिटिश शासनकाल में नेपाल अपनी घरेलू नीति में स्वतंत्र रहा। लार्ड कर्जन की विदेश नीति से ज्ञात होता है कि वह नेपाल के स्वामी भक्त गोरखा सैनिकों से बहुत प्रभावित था तथा नेपाल को भारतीय सेना का एक महत्वपूर्ण भर्ती केन्द्र मानता था।[28] अंग्रेजों ने 1923 ई. में नेपाल में अपना नाममात्र का प्रभुत्व भी छोड़ दिया, सिवाय विदेश नीति के। यही स्थिति 1947 ई. तक बनी रही। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात विश्व की राजनीति में भारी फेर बदल हुआ। अगस्त 1947 ई. में भारत का विभाजन हुआ तथा अक्टूबर 1949 ई. में चीन में साम्यवादी सरकार बनी। नेपाल में शीघ्र ही राणा वंश का आधिपत्य समाप्त हुआ और पुन: राजशाही स्थापित हुई। विश्व के एक मात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल को अपनी भावी व्यवस्था के लिए आशंकित तथा भयग्रस्त होना स्वाभाविक था। अब उसके सामने उत्तर तथा दक्षिण में विश्व की दो अधिकतम जनसंख्या वाले देश थे- भारत तथा चीन।

ब्रिटिश शासक अपनी स्वेच्छा से बिना किसी चुनाव या जनमत संग्रह के भारत का राज्य कांग्रेस को हस्तांतरित[29] कर गये थे तथा उन्होंने इसे भारत के लिए एक सुन्दर उपहार बताया था।[30] भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू (1947-1964 ई.) अपने विचारों तथा कृत्यों से हिन्दूराष्ट्र विरोधी, ईश्वर[31] तथा आत्मा[32] में न आस्था रखने वाले, मिश्रित संस्कृति के पोषक, अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी तथा राष्ट्रीयता की अपेक्षा अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत थे। 1950 ई. के भारत के संविधान में कहीं भी 'भारतीय संस्कृति' एवं 'राष्ट्र' शब्द तक का प्रयोग न था। कुछ विदेशी विद्वान उन्हें नास्तिक[33] मानते हैं।

दूसरी ओर नेपाल के उत्तर में माओत्सेतुंग के अधिनायकत्व में चीन का निर्माण हुआ। जिसकी सरकारी नीति अतिक्रमण, सीमा विस्तार तथा भारत के संबंध में नेपाल में दूषित प्रचार कर अपना प्रभाव तथा दबाव स्थापित करने की थी। उसका लक्ष्य अपनी सीमाओं से हट कर विस्तार करने तथा भारत विरोध की थी। ऐसी दुविधा एवं असुविधापूर्ण स्थिति में नये भारत-नेपाल संबंध की शुरूआत परस्पर न होकर त्रिकोणात्मक थी।

पं. नेहरू तथा नेपाल-

पं. नेहरू के प्रधानमंत्रीत्व काल में भारत नेपाल के बीच पहली महत्वपूर्ण शांति तथा मैत्री संधि 30 जुलाई 1950 ई. को नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में वहाँ के प्रधानमंत्री मोहन शमशेर जंग बहादुर तथा भारत के राजदूत चन्द्रशेखर नारायण सिंह के द्वारा दोनों देशों की अपनी सरकारों से बातचीत हुई। इसमें दस अनुच्छेद हैं। संधि की आगामी महत्व तथा साथ ही विघटनकारी तत्वों के प्रचार के कारण इसके अनुच्छेदों का जानना महत्वपूर्ण होगा।[34]

1. प्रथम अनुच्छेद में भारत नेपाल के प्राचीन संबंधों के आधार पर दोनों देशों में चिरकालीन शांति तथा मैत्री बनाये रखने तथा एक-दूसरे की सर्वोच्चता, अखण्डता एवं स्वतंत्रता को पूर्ण सम्मान देने की बात कही गई।

2. पड़ोसी राज्यों के कारण या किसी और कारण से गहरे मतभेद या ग़लतफहमी उत्पन्न होने पर, जिससे आपसी संबंधों पर बुरा असर पड़ता हो, आपस में सूचित करेंगे।

3. कूटनीतिक संबंधों के बारे में है।

4. वाणिज्य दूत की नियुक्ति करेंगे।

5. यह अनुच्छेद नेपाल की सुरक्षा से संबंधित है। इसमे नेपाल अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक सैनिक हथियार, गोला, बारूद, युद्ध सामग्री भारत या भारतीय क्षेत्र से होते हुए निर्यात करने के लिए स्वतंत्र होगा, परन्तु ऐसा करते समय उसे भारत से विचार-विमर्श करना होगा।

6. दोनों देशों को पड़ोसी मित्रता के प्रतीक स्वरूप, एक-दूसरे के नागरिकों को अपने सीमा क्षेत्र में उद्योग एवं आर्थिक विभाग में समान नागरिक अधिकार प्रदान करते हुए भागीदारी, रियायत का अधिकार प्रदान करेंगे।

7. दोनों देश अपने देश में एक-दूसरे के नागरिकों को रहने के हक, संपति के मालिकाना हक एवं व्यापार-वाणिज्य में सहभागिता तथा एक-दूसरे देश में आने-जाने की सुविधा प्रदान करेंगे।

8. इस संधि के लागू होते ही पुरानी सारी संधियाँ स्वत: निरस्त हो जायेंगी।

9. हस्ताक्षर के दिन से यह संधि मानी जायेगी।

10. दोनों देशों मे से कोई भी देश इस संधि से हट सकता है, बशर्ते उसे एक वर्ष पूर्व इसके बारे में सूचना देनी होगी।

उपरोक्त शांति तथा मैत्रीपूर्ण संधि भारत तथा नेपाल देशों के बीच एक सुन्दर उदाहरण है, जो दोनों देशों की सर्वोच्चता, अखण्डता तथा स्वतंत्रता का पूर्ण सम्मान करती है, परन्तु नेपाल में माओवादी कम्युनिस्ट इसमें सदैव छिद्रान्वेषण करते रहे हैं। आगामी 1960, 1970 तथा 1980 ई. के दशकों मे इस पर बेहूदे तथा

काल्पनिक आधारों द्वारा विषवमन होता रहा। बाद में 2008 ई. में माओ नेता एवं नेपाल के प्रधानमंत्री ने इसकी आड़ में अपना उल्लू सीधा करना चाहा पर उन्हें असफलता ही मिली।

उपरोक्त संधि के तीन चार मास बाद ही नेपाल में राणा वंश समाप्त हो गया तथा पुनः शाह के वंश महाराजा त्रिभुवन वीर विक्रमशाह का राज्य प्रारम्भ हुआ, परन्तु जब उन पर संकट आया तो 1951 ई. में वे भारत आये तथा नेपाल के भारत में पूर्ण विलय का प्रस्ताव भी रखा, परन्तु पं. नेहरू ने इसे अस्वीकार कर दिया।[35] इतना ही नहीं 1955 ई. में नेपाल को संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बनवाया। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में सोवियत रूस ने यह कहकर इसका विरोध किया कि नेपाल तो भारत का अंग है ही।[36] नेपाले में चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए मई 1959 ई. में पं. नेहरू नेपाल गए तथा वहाँ के प्रधानमंत्री वी. पी. कोईराला जनवरी 1960 ई. में भारत आये तथा सितम्बर में एक व्यापारिक समझौता किया।

भारत की चीन सरकार के प्रति उदासीन, अकर्मण्य तथा भ्रामक मैत्री की नीति ने भारत में पाश्चात्य समाजवाद तथा कम्युनिस्टों को संरक्षण देने से नेपाल में कम्युनिस्ट पार्टियों के विस्तार तथा प्रभाव बढ़े। नेपाल में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 22 अप्रैल 1949 ई. को राजशाही के विरुद्ध, कामरेड पुष्पलाल द्वारा स्थापित की गई।[37] परिस्थितियों का लाभ उठाकर 1अगस्त 1955 ई. को नेपाल व चीन सरकार के बीच पहला समझौता हुआ जिसमें पंचशील को मान्यता दी गई। नेपाल ने तिब्बत को चीन का आन्तरिक मामला स्वीकार किया। दोनों में राजदूत संबंध स्थापित हुए। चीन ने न केवल नेपाल में घुसपैठ की, बल्कि नेपाल के किसानों को चीन आने का निमंत्रण भी दिया। 21 सितम्बर 1956 ई. को नेपाल व चीन में दूसरा समझौता हुआ जिसमें दोनों ने एक दूसरे को व्यापारिक सुविधाएँ दी। अक्टूबर 1957 ई. में चीन ने नेपाल के प्रधानमंत्री को चीन बुलाया तथा चीन ने नेपाल की पंचवर्षीय योजना में छः करोड़ भारतीय रूपये देने का आश्वासन दिया। इसके साथ ही उसने भारत के प्रति विरोध भी बढ़ाया।[38] चीन के प्रधानमंत्री चाउ-इन-लाई ने नेपाल की यात्रा की तथा एक करोड़ रूपये आश्वासन की पहली किस्त के रूप में दिये, परन्तु नेपाल तिब्बत सीमा के बारे में कोई आश्वासन नहीं दिया। उपरोक्त तोहफे से नेपाल का शासक वर्ग चिंतित भी हुआ। एक नेपाली अधिकारी ने चीन की इस सहायता पर टिप्पणी की। उसने चीन के बारे में कहा कोई आकाश से अमृत वर्षा नहीं है।[39] इसी भांति मार्च 1960 ई. में नेपाल के प्रधानमंत्री बी. पी. कोईराला को पीकिंग बुलाया तथा नेपाल की आर्थिक सहायता 21 मिलियन ज्यादा कर दी तथा नेपाल तिब्बत सीमायें निर्धारित करने के लिए दोनों के एक संयुक्त दल की बात की।[40] ऐसा माना गया मानो चीन प्रेम प्रदर्शित कर रहा था और नेपाल को अभी तक इसमें भागीदार होने से कोई हानि न थी।[41] चीन ने नेपाल की सीमाओं पर भी छेड़छाड़ को बढ़ावा दिया[42] अब चीन ने हिमालय की माउन्ट एवरेस्ट चोटी पर अपना अधिकार बतलाया।[43] इससे नेपाल में बेचैनी बढ़ी, परन्तु दिखावे के लिए चीन ने नेपाल की यह बात मान ली कि वे पर्वत के दक्षिण भाग पर अपना अधिकार नहीं मानेंगे। भारत ने इस पर तीव्र प्रतिक्रिया की। पं. नेहरू ने भारत की लोकसभा में कहा कि नेपाल पर कोई भी अतिक्रमण भारत पर अतिक्रमण समझा जायेगा। नेपाल में इस कथन की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। इसे नेपाल की आन्तरिक नीति में दखल माना गया। कुछ समय बाद नेपाल ने काठमाण्डू में स्थित दलाई लामा के कार्यालय को बन्द कर दिया। भारत सरकार ने इसकी आलोचना की। नेपाल में इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया, वहीं चीन ने नेपाल की कार्यवाही की सराहना की।

दिसम्बर 1960 ई. में नेपाल नरेश महेन्द्र ने प्रधानमंत्री बी. पी. कोईराला से बातचीत कर प्रथम आपातकाल की घोषणा की जो लगभग 19 मास चली। नेपाल में पंचायती शासन स्थापित हुआ। इस बीच नेपाल कांग्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। भारत में इसकी पुनः तीव्र प्रतिक्रिया हुई। इस सन्दर्भ में यह कहना सर्वथा उचित होगा कि नेपाल भारत के बीच दूरी पैदा करने में सफल हो रहा था। साथ ही कुछ कम्युनिस्ट दल, सरकार के कुछ केन्द्रों पर राजनीति में सक्रिय भाग ले रहे थे।[44]

भारत के प्रति नेपाल की तीखी अभिव्यक्ति 1961 ई. में तत्कालीन सर्वोदय नेता श्री जय प्रकाश नारायण के काठमाण्डू जाने पर हुई। वहाँ उनके विरुद्ध, उग्र प्रदर्शन, काले झण्डे, जूते-चप्पलों की बौछार तथा भारतीय विस्तारवाद मुर्दाबाद, जय प्रकाश वापस जाओ, के नारों से हुआ।[45]

चाउ-इन-लाई ने एक पत्र लिखकर राजा महेन्द्र की नई सरकार का समर्थन किया। पकिस्तान ने राजा महेन्द्र के राज्याभिषेक पर काठमाण्डू में एक प्रतिनिधि भेजा दोनों देशों के कूटनीतिक संबंध चाहे जो हों, पर राजा इच्छुक न थे।[46] इसका दुष्परिणाम तब हुआ, जब अक्टूबर 1962 ई. में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया जिसमें भारत की शर्मनाक हार हुई। भारत नेपाल के गत 12 वर्षों (1950-62) के संबंधों का परिणाम यह हुआ कि प्राचीन काल से सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा ऐतिहासिक रिश्तों से जुड़े नेपाल ने भारत के पक्ष में एक शब्द भी न बोला। नेहरू जी की स्थापना की नीति, अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद का प्रेम, चीन के प्रति भ्रामक लगाव तथा मित्रता, भारतीय कम्युनिस्ट से लगाव की नीति पूर्णतया असफल साबित हुआ। भारत नेपाल के प्राचीन सांस्कृतिक संबंधों की पूर्णतः उपेक्षा तथा हिन्दुत्व के प्रति विरोध ने युग-युग से चले भारत तथा नेपाल को एक-दूसरे का विरोध बना दिया तथा नेपाल का झुकाव चीन की ओर बढ़ता गया।

लाल बहादुर शास्त्री तथा नेपाल-

यद्यपि प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का काल बड़ा अल्प (9 जून, 1964 - 11 जनवरी, 1966 ई. तक) रहा तथा उन्होंने भारत-पाक युद्ध (1965 ई.) में भारतीयों में नवजीवन दिया, परन्तु भारतीय जनमानस 1962 ई. की चीन पराजय को न भूला। इसके साथ नेपाल तथा भारत में बढ़ते हुए कम्युनिस्टवाद तथा अन्य विघटनकारी शक्तियों से चौकन्ना किया। इसके विपरीत भारत के राष्ट्रवादी तथा हिन्दुओं के संगठनों ने नेपाल जैसे हिन्दू राष्ट्र के साथ सांस्कृतिक तथा पारिवारिक संबंधों को अतीत की भांति सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न किया। इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सन् 1963 ई. में श्री गुरू जी (श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर) की काठमाण्डू में भगवान पशुपतिनाथ के दशनार्थ जाने पर उनकी भेंट नेपाल के महाराजा महेन्द्र से हुई तथा उन्हें भारत आने का निमंत्रण दिया जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। इससे पहले की उनकी यात्रा हो, संघ ने पहले पं. नेहरू तथा बाद में लाल बहादुर शास्त्री से लिखित स्वीकृति भी प्राप्त कर ली। महाराजा का यह कार्यक्रम 14 जनवरी 1965 ई. को मकरसंक्रांति पर्व पर नागपुर में होना था, परन्तु यात्रा के एक सप्ताह पूर्व भारत के विदेश विभाग के नौकरशाहों तथा सरकारी अधिकारियों ने इसे अचानक स्थगित कर दिया। संभवत: इसके पीछे पं. नेहरू की तटस्थता तथा पाश्चात्य सेक्यूलरवाद का प्रपंच था। कुछ भी हो इससे समूचे भारत के जनमानस में जबरदस्त प्रतिक्रिया तथा कांग्रेस सरकार की कटु आलोचना हुई। देश के प्राय: सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने इसपर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। कांग्रेस शासन के इस पग को अदूरदर्शितापूर्ण[47] हिन्दूद्रोही सरकार,[48] हिन्दू समाज से बदला,[49] तथा सरकार के इस कृत्य को निर्लज्जपूर्ण[50] धर्मनिरपेक्षता का दंभ[51] तथा पिछली कूटनीति का नग्न रूप[52] कहा ।इसे भारत सरकार का दिवालियापन[53] तथा नेपाल को कम्युनिस्टों की गोद में ढकेलने का प्रयास[54] माना गया। प्रसिद्ध समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया ने क्षुब्ध होकर कहा- भारत सरकार जब वेटिकन के पोप के ईसाई सम्मेलन में शामिल होने के लिए आज्ञा दे सकती है तो नेपाल के महाराजा को संघ के नागपुर उत्सव में भाग लेने से क्यों रोका गया है? भारत और नेपाल के सम्बंधों को रक्षा का नाता बतलाया गया।[55] इसी भांति नेपाल की जनता ने भी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। यात्रा स्थागित किये जाने से वहाँ के लोगों ने भारत सरकार की अदूरदर्शी नीति कहा और कहा कि उक्त यात्रा दोनों देशों के संबंधों को आगे बढ़ाने में बड़ी सहायक होगी।[56] एक विद्वान के अनुसार, ''महाराजा की यात्रा से कुछ लोगों का यह भ्रम दूर होता है कि नेपाली संस्कृति उत्तर (यानि चीन) से नहीं आई, बल्कि भारत तथा नेपाल के हिन्दुओं में कोई अलग नहीं है।''[57]

श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथा नेपाल-

श्रीमती इन्दिरा गाँधी का प्रधानमंत्रीत्व, मामूली अपवाद के साथ 1966 से 1984 ई0 तक अर्थात् कुल 5825 दिनों का रहा। इन्दिरा गाँधी ने अपनी राजसत्ता को बनाये रखने के लिए भारतीय कम्युनिस्टों का हाथ पकड़ा तथा उन्हें महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त कर दिया । मुख्यत: शिक्षा विभाग उन्हें सौंप दिया। 1975 ई. में आपातकाल की घोषणा करते हुए भी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया उसके साथ थी। इससे प्रोत्साहित हो, नेपाल में कम्युनिस्ट विचारधारा की नई-नई पार्टियां बन गईं, साथ ही उनमें आपसी कलह भी बढ़ा। 1968 ई. में कामरेड पुष्पलाल ने अपनी एक अलग पार्टी बनाई तथा स्वयं इसके महासचिव बने। 1978 ई. कामरेड मोहन विक्रम सिंह ने एक नई कम्युनिस्ट पार्टी बनाई। शीघ्र ही नेपाल में लगभग एक दर्जन कम्युनिस्ट पार्टियाँ बन गई।[58] नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टियों ने अपना मुख्य उद्देश्य नेपाल में महाराजा शासन का अन्त तथा नेपाल में हिन्दू राष्ट्र के स्थान पर धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की स्थापना बतलाया और साथ ही नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन भी हुए। 1972 ई. में राजा महेन्द्र की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र राजा वीरेन्द्र शासक बने तथा 1980 ई. जनमत समूह द्वारा संवैधानिक परिवर्तन भी हुआ। श्रीमती इन्दिरा गाँधी के काल में नेपाल के प्रति नेहरूवादी तटस्थता तथा सांस्कृतिक अलगाव तथा पाश्चात्य सेक्यूलरवाद के योजनापूर्वक प्रसार की नीति चलती रही। उसकी नीति से नेपाल में न केवल हिन्दुत्व की भावना को दुर्बल करने के प्रयास हुए, बल्कि नेपाल में मुसलमानों को जाने के लिए प्रोत्साहन मिला। इससे नेपाल का सामाजिक ढाँचा भी अस्त-व्यस्त हो गया। साथ ही स्वतंत्रता के पश्चात पाकिस्तान के निर्माण से आई.एस.आई. के एजेंटों द्वारा भी नेपाल में मुस्लिम जनसंख्या बढ़ती गई। नेपाल में भारतीयों के जाने की खुली छूट से उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल तथा सिक्किम से लगी सीमा पर हजारों मदरसे स्थापित हो साथ ही नेपाल में भी अनेक मदरसे तथा मस्जिदें बनी। 1981 ई. की जनगणना के अनुसार मुसलमानों की जनसंख्या बढ़कर चार प्रतिशत हो गई।[59] नेपाल में वर्तमान में 2000 से भी अधिक मस्जिदें हैं। मुसलमानों की भांति ईसाईयों की जनसंख्या बढ़ी। 1967 ई. तक नेपाल में एक भी ईसाई न था।[60] इन्हीं दिनों मेघालय, मिजोरम तथा नागालैण्ड से ईसाई पादरी भी वहाँ पहुँचे, 1968 ई. में पहली बार वहाँ 25 ईसाई बने। आगामी 22 वर्षों में इनकी संख्या बढ़कर 20,000 हो गई। इंग्लैण्ड, जर्मनी तथा अमेरिका के पादरी भी वहाँ गये। परिणामस्वरूप ईसाई जनसंख्या तीन लाख से अधिक हो गई। 3500 गिरजाघर बन गए। अकेले काठमाण्डू में ही 150 चर्च व प्रार्थना गृह हैं। परिणामस्वरूप नेपाल में हिन्दू जनसंख्या, जहाँ 1981 में 2 करोड़ से अधिक अर्थात् 90 प्रतिशत थी। यह घटकर 1991 ई. में 81 प्रतिशत तथा आगे घटकर कुल 70 प्रतिशत रह गई है।

श्री राजीव गाँधी तथा नेपाल-

श्री राजीव गाँधी का प्रधानमंत्रीत्व काल 31 अक्टूबर 1984 से 2 दिसम्बर 1989 ई. अर्थात पांच वर्ष से अधिक रहा। इस काल में भारत नेपाल सुरक्षा तथा व्यापार संबंधों को लेकर तेजी से टकराव हुआ। 1950 ई. की शांति सन्धि को लेकर नेपाल द्वारा कुछ शंकायें व्यक्त की गयीं। नेपाल जो अपने हथियारों की पूर्ति पहले भारत से करता था तथा कुछ मात्रा में इजरायल से भी खरीदता था, अब उसकी निर्भरता चीन पर बढ़ती गई। अत: भारत की विश्वसनीयता घटी तथा चीन का दबाव बढ़ा। श्री राजीव गाँधी के काल में चीनी सैनिकों की देख रेख में ट्रकों में लदे हथियारों की पहली खेप 1988 ई. में काठमाण्डू पहुँची।[61] इससे पूर्व ही काठमाण्डू से ल्हासा को जोड़ने वाला राजमार्ग तैयार कर दिया गया था। भारत ने औपचारिक रूप से इसका प्रतिरोध भी किया, परन्तु न ही नेपाल ने और न ही चीन ने इसकी परवाह की। इसके साथ-साथ नेपाल के राजा विरेन्द्र ने बहुत पहले 1975 ई. में तथा पुन: 1984 ई. में नेपाल को, एक शांति क्षेत्र घोषित करने की विश्व राष्ट्रों से प्रार्थना की थी। इसका समर्थन चीन, पाकिस्तान तथा बाद में विश्व के अनेक देशों ने किया। अत: चीन की खेप आने से शीघ्र ही भारत तथा नेपाल के संबंधों में 23 मार्च से आगामी 15 महीनों तक गतिरोध बना रहा। नेपाल के प्रधानमंत्री कृष्ण प्रसाद कोईराला भारत की यात्रा पर आये, परन्तु उनके वापस लौटने के दूसरे ही दिन पुन: चीनी हथियारों की दूसरी खेप नेपाल पहुँच गयी। विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार ने इन हथियारों को चीनी खिलौना[62] कहा तथा भारत नेपाल संबंधों के प्रति सरकार की उपेक्षा को राजीव गाँधी का व्यक्तिगत सनक भी कहा गया।[63] भारत में नेपाल के प्रति सरकार की नीति को यथा स्थितिवाद कहकर कटु आलोचना की गई। राजीव गाँधी के बाद कुछ समय के लिए विश्वनाथ प्रताप सिंह 2 दिसंबर 1989 ई. से 9 नवम्बर 1990 ई. तक तथा चन्द्रशेखर 10 नवम्बर 1990 ई. से 20 अक्टूबर 1991 ई. तक भारत के प्रधानमंत्री रहे।

श्री नरसिम्हा राव तथा नेपाल-

प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव का शासनकाल जून 1991 ई. से मई 1996 ई. तक रहा। नेपाल में इस समय हिन्दू राष्ट्र कहे जाने के प्रश्न पर नेपाल की राजनैतिक पार्टियों में परस्पर टकराव हो रहा था। श्री नरसिम्हा राव जब नेपाल गये तो विमान स्थान से काठमाण्डू शहर तक उनका भी विरोध जयप्रकाश नारायण की भाँति हुआ। भारत के विरोध में पर्चे बाटें गये। नेपाल के प्रधानमन्त्री डॉ. गिरिजा प्रसाद कोइराला को बी. वी. सी. को दिये एक टेलीफोन वार्तालाप में कहा- ''देश में कुछ ऐसे तत्व है जो भारत नेपाल सम्बन्धों में सुधार नहीं चाहते है।''[64] वस्तुत: यह नेपाल में राजनैतिक उथल-पुथल का काल था। मोटे रूप से 12 मई 1991 ई. से 23 जुलाई 2001 ई. तक यानी आगामी दस वर्षों में दस प्रधानमंत्री बदले थे।[65] नरसिम्हा राव के ही काल में अप्रैल 1995 ई. में नेपाल के प्रधानमंत्री मनमोहन अधिकारी भारत आये तथा 1950 ई. में हुई संधि में भारी परिवर्तन तथा संशोधन की मांग की। उसने भारत से आर्थिक स्वतंत्रता की मांग की। इसके साथ ही उसने चीन के साथ संबंध सुधारने की कोशिश की, परन्तु 13 फरवरी 1996 ई. से माओवादियों ने जनयुद्ध की घोषणा कर दी तब से 3 दिसम्बर 2001 ई. के बीच पुलिस ने 1000 तक और माओवादियों ने 800 से ज्यादा लोगों की हत्यायें करदी थी।[66]

डॉ. मनमोहन सिंह तथा नेपाल-

21वीं शताब्दी के पूर्व तथा इस सदी के प्रारम्भ में भारत तथा नेपाल में तेजी से राजनीतिक बदलाव तथा हलचलें हुईं। भारत में क्रमश: अटल बिहारी बाजपेयी (16 मई 1996 ई.), एच. डी. देवगौड़ा (1 जून 1996 ई.), इन्द्र कुमार गुजराल (21 अप्रैल 1997 ई.) तथा पुन: अटल बिहारी बाजपेयी (19 मार्च 1998 ई.) के प्रधानमंत्री काल में सरकारें बदली। उसी भांति नेपाल में 1 जून 2001 ई. को राजा वीरेन्द्र की परिवार सहित हत्या कर दी गई। तथा 4 जून को उनका भाई ज्ञानेन्द्र शासक बना। शीघ्र ही उसका टकराव वहाँ की राजनैतिक पार्टियों से शुरू हुआ। कई प्रधानमंत्री बदले। फरवरी 2005 को राजा ज्ञानेन्द्र ने शासन की सभी शक्तियाँ अपने हाथ में ले ली। राजा ज्ञानेन्द्र ने समाचार पत्रों पर प्रतिबन्ध लगा दिये। भारतीय दूतावास से संचार संबंध काट दिये। नेपाल के माओवादी दलों को आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया। अमेरिका तथा भारत से सैनिक मदद मांगी। नेपाल के सेनापति पयार जंग बहादुर ने भारतीय सेनापति जे. जे. सिंह से सहायता का अनुरोध किया, परन्तु डॉ. मनमोहन सिंह की संप्रग सरकार ने किसी प्रकार के सहयोग को अस्वीकार कर दिया।[67] डॉ. मनमोहन सिंह ने सार्क के सम्मेलन में जाने से मना कर दिया।[68] गृहमंत्री शिवराज पाटिल ने कहा कि वह नेपाल की घटनाओं से नाराज नहीं पर चिंतित हैं।[69] इसी समय पूर्व प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोईराला की 54 वर्षीय पुत्री सुजाता, नेपाल सेना से बचकर भारत पहुँची। उसने राजा ज्ञानेन्द्र के आपातकाल की विकट तथा विकृत स्थिति का वर्णन किया,[70] जो सच्चाई के अनुकूल न थी। एक जर्मन ईसाई से विवाह के बाद वह प्राय: अपने दो बच्चों के साथ जर्मनी ही रहती थी। नेपाल, वह ईसाई धर्म के प्रचार के लिए आयी थी तथा मदर टेरेसा की संस्था से जुड़ी।[71] राजा ज्ञानेन्द्र की स्थिति अस्थिर तथा असमंजस में थी। वह चीन की गोद में जाना नहीं चाहता था, परन्तु नेपाल के कम्युनिस्ट दलों द्वारा उसका कटु विरोध हो रहा था। वे नेपाल में सेकुलरवाद तथा जनतंत्रात्मक शासन की मांग कर रहे थे। नेपाली सेना तथा माओवादियों में हिंसात्मक संघर्ष शुरू होने लगा था।

भारत सरकार की इस दुरावस्था में तटस्थता की नीति रही जबकि चीन इसे नेपाल का आन्तरिक मामला कहकर माओवादियों

को प्रोत्साहन दे रहा था। आखिर नेपाल में माओवादी शक्तियों को सफलता मिली। अप्रैल 2008 कामरेड पुष्पदहल प्रचण्ड को भारी सफलता मिली।[72] राजा ज्ञानेन्द्र के महल छोड़कर जाने के आदेश मिले।[73] वह तत्कालीन परम्परा को तोड़ पहले चीन तथा बाद में भारत की यात्रा पर आये। उन्होंने नेपाल के सेनापति को बदला।[74] भगवान पशुपतिनाथ मंदिर के भारतीय पुजारियों को हटाकर नेपाली पुजारी नियुक्त किये जो नेपाली परम्परा के विपरीत था।[75] कुल मिलाकर कामरेड प्रचण्ड ने अपने नौ महीने के शासनकाल में लगभग 26 नियम बनाये जिसमें उसे 21 वापस लेने पड़े तथा शेष भी विवादास्पद रहे।[76] इन सब प्रसंगों पर भारत सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। दोनों के व्यापारिक, सामरिक तथा सांस्कृतिक संबंधों को सुधारने के लिए कोई विशेष प्रयत्न न हुआ। केवल 1950 ई. की संधि पर पुनः वार्ता एवं जन संसाधनों के विकास में कोसी परियोजना पर वार्ता हुई[77] 2010 में भारत के तत्कालीन विदेशमंत्री प्रणव मुखर्जी नेपाल भी गये जहाँ उन्होंने हर संभव सहायता तथा विकास का वायदा अवश्य किया, परन्तु कालान्तर में नेपाल की घरेलू नीति में माओवाद बढ़ा।[78] इसके साथ ही नेपाल के चीन से आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टि से संबंध मजबूत हुए। परिणामस्वरूप नेपाल सरकार तथा भारत की दूरी बढ़ती गई। 2010 में नये संविधान के अनुसार नेपाल के प्रेसीडेन्ट राम बरन यादव पहली बार भारत आये।[79] संबंधों में कुछ सुधार की शुरूआत हुई। प्रचण्ड के हटते ही उन्होनें पुनः पूर्व सेनापति को नियुक्त किया। भारतीय पुरोहितों की भगवान पशुपति नाथ की पूजा के लिए पुनः नियुक्ति हुई। भारत ने आर्थिक दृष्टि से मदद दी,[80] परन्तु नेपाल की अस्थिरता तथा आर्थिक स्थिति में कोई उल्लेखनीय सुधार न हुआ अमेरिका की प्रतिष्ठित फोरेन पालिसी मैगजीन के अनुसार विश्व के 177 नकारा देशों में नेपाल का 25 वाँ स्थान था[81] जबकि सोमालीलैण्ड का प्रथम, पाकिस्तान का 10 वाँ तथा भारत का 87 वाँ स्थान था नेपाल में गरीबी के साथ अस्थिरता का भयंकर दौर चलता रहा।[82] भारत ने इस ओर कम ध्यान दिया कि नेपाल की अस्थिरता से भारत के लिए भंयकर खतरा हो सकता है[83]। चीन का भाव नेपाल में प्रभुत्व स्थापन का था। यह सीधे भारतीय सीमाओं पर समस्या बन सकता है।[84] नेपाल में लोकतन्त्र प्रहसन बन गया। जिसकी विकराल स्थिति भारत में भी असमंजस की स्थिति पैदा कर सकती है[85]। डॉ.मनमोहन सिंह के लम्बे रहने के काल में भारत नेपाल सम्बधों में परस्पर आर्थिक तथा सामजिक कटुता, सांस्कृतिक अविश्वास तथा राजनीतिक सुदृढ़ता कम हुई है, नवम्बर 2013 में नेपाल में दूसरी बार बनी संविधान सभा के चुनाव के बाद सम्बन्ध सुधरे जिसमें नेपाल कांग्रेस के श्री सुशील कोईराला प्रधानमन्त्री बने।

भारत में भी सत्ता परिवर्तन हुआ श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 26 मई 2014 के शपथ ग्रहण समारोह के साथ, नई सरकार बनी। भारत के पड़ोसी देशों, दक्षेस के देशों को इसमें आमंत्रित किया गया। नेपाल के प्रधानमन्त्री श्री सुशील कोईराला भी आये। श्री नरेन्द्र मोदी सत्ररह वर्षों बाद नेपाल जाने वाले अगस्त 2014 में पहले भारत में प्रधानमन्त्री थे। वहाँ उन्होने पुनः भारत नेपाल के प्राचीन सांस्कृतिक धार्मिक सम्बन्धों को जागृत किया तथा पुनः दृढ़ सम्बन्धों की नींव डाली। नेपाल के इतिहास में इससे पूर्व कभी भी किसी भी, देश के महान व्यक्ति या राजनैतिक नेता का इतना भावात्मक स्वागत न हुआ जितना कि उनका। अतः ये उम्मीद की जा सकती है कि वर्तमान में, भारत नेपाल के भटकाव के सम्बन्धों का निराकरण होगा तथा धर्म व संस्कृति की डोर मजबूत होगी। दोनों देश सबल सुहृद हिन्दू संस्कृति से अनुप्राणित हो विश्व में खड़े होगें।

सन्दर्भः-

1. हृदय नारायण दीक्षित नेपाल में आग, 'भारत में आँच', 'दैनिक जागरण, 18 फरवरी 2005, इन्द्रेश कुमार, नेपाल के प्रति हिन्दुओं को चिन्ता क्यों?', राष्ट्र धर्म, मई 2005, पृ. 8
2. देवदत्त, 'नेपाल स्व का अस्तित्व, एक मात्र हिन्दू राष्ट्र, राष्ट्र धर्म, मई 2005, पृ. 25
3. नेपाल में 14 अंचल है, महाकाली, सेनी, मेरी, करनलाली, राप्ती धवलागिरि, लुम्बिनी, गडंकी, बागमती, नारायणी, जनकपुर, सागरमाथा, कोशी, मेची।
4. सतीश चन्द्र मित्तल, स्वामी विवेकानन्द तथा नारी सम्मान, पाञ्चजन्य, 6 मई 2012
5. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, 'उर्मिला' काव्य।
6. वी. ऐ. स्मिथ, अशोक, द बुद्धिस्ट एम्परर ऑफ इंडिया, प्रथम संस्करण 1901, भारतीय संस्करण, बुलन्दशहर, 1981, पृ. 70-71
7. राधाकृष्ण चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पटना, 1989, पृ. 239
8. वही पृ. 307
9. वही पृ. 308
10. रोमिला थापर, ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया, भाग-1, पेगुंइन, 1966, पृ. 144
11. वही पृ. 226
12. वही पृ. 226
13. डॉ. नवीन शर्मा, 'हिमाचल प्रदेश का राजनीतिक इतिहास', शिमला, 2005, पृ. 182
14. देखें विलियम मूरक्रॉफ्ट, ट्रैवल्स इन द हिमालियन प्रोविन्सेज ऑफ हिन्दुस्तान खण्ड द पंजाब इन लद्दाख एण्ड काश्मीर, इन पेशावर, काबुल कन्दूज, भारतीय संस्करण पटियाला, 1971
15. डॉ. नवीन शर्मा, पूर्व उद्धरित, 'गोरखे, रणजीत सिंह, और हिमाचल', पृ. 181-219
16. सी. एफ. डी. ला. थोस्से, 'हिस्ट्री ऑफ इण्डिया फार हाई स्कूल्स, ग्लासको', 1909, पृ. 254
17. वही पृ. 254
18. लैटर्स ऑफ सर हेरनी मोण्टगुमरी लारेंस : सलेक्शन फ्राम द कारस्पोडेन्स ऑफ सर एच. एम. लारेंस ड्यूरिंग सीज़ ऑफ लखनऊ, मार्च, 2 से जुलाई 1857 तक, सम्पादित-शिव बहादुर सिंह, नई दिल्ली, 1978
19. वही, लारेंस का लार्ड कैनिंग को पत्र, 2 मई 1857
20. वही, लारेंस का पत्र लार्ड कैनिंग को, 21 मई 1857
21. वही, लारेंस का पत्र जे. काल्विन को, 21 जून 1857
22. रूचि तिवारी, पार्टीशन ऑफ इंडियन स्टेट्स इन द रिवोल्ट ऑफ 1857 एण्ड देयर लीडर्स, जनरल ऑफ हिस्ट्री एलोमनी, मेरठ जनरल, भाग-7, 2006, पृ. 65
23. आचार्य सोहन लाल रामरंग, 1857-1947, स्वतंत्रता संग्राम सत्र, नोएडा, 2007, पृ. 62
24. डॉ. एस. एन. सेन एट्टीन फिफ्टी सेवन, नई दिल्ली, 1957, पृ. 370
25. श्री निवास बाला जी हार्डिकर, 1857, पृ. 196-99
26. प्रो. आराधना, प्रथम मुक्ति संग्राम के योद्धा नाना साहेब, मेरठ जनरल, पृ. 144
27. डॉ. अरूण शर्मा, वीमेन वारर्यस ऑफ 1857 रिवोल्ट, मेरठ जनरल, पृ. 53
28. सतीश चन्द्र मित्तल, ईंडिया डिस्टोरटेड : ए स्टेडी ऑफ ब्रिटिश हिस्टोरियन्स ऑन इंडिया, भाग-3, नई दिल्ली, 1998, पृ. 276
29. उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश सरकार ने 1970-81 के दौरान लन्दन से 11 भागों में निकोलस मैसर तथा लुम्बी द्वारा सम्पादित ग्रन्थ का नाम भी द ट्रांसफर ऑफ पॉवर दिया है।

30. सतीश चन्द्र मित्तल, 'राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत का स्वाधीनता संग्राम', नई दिल्ली, 2012, पृ. 298, एस. सी. मित्तल, 'ब्रिटिश सरकार ने भारत की राजसत्ता कांग्रेस को ही क्यों सौंपी?', पाञ्चजन्य, 7 मार्च 2010
31. 'सेयिंग्स ऑफ नेहरू', द हिन्दुस्तान टाइम्स, 27 मई 1965, सतीश चन्द्र मित्तल, 'हिन्दुत्व और पंडित जवाहर लाल नेहरू', पाञ्चजन्य, 9 फरवरी, 2014
32. पं. जवाहर लाल नेहरू, डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पृ. 15-16, ग्लिम्सेज ऑफ द वर्ल्ड हिस्ट्री, पृ. 37, 84-85, 141, 503, स्पीचेज भाग तीन, पृ. 432, 'महात्मा गाँधी को लिखे पत्रों में धर्म की कटु आलोचना', नेहरू पत्र, 7 मार्च 1933, व 5 मई 1933.
33. रस्किन डिकीन्स, द गॉड डिल्युशन, 2007, पृ. 66
34. अशोक चौरसिया, 'माओवादी समझौता बनाम सच', पाञ्चजन्य, 18 मई 2008
35. श्री इन्द्रेश कुमार, 'नेपाल के प्रति हिन्दुओं की चिन्ता क्यों', राष्ट्रधर्म, मई 2005, पृ. 7-8; राजीव शुक्ला, 'नेपाल में अशांति का अथ', दैनिक जागरण, 2005
36. वही
37. नेपाल में कम्युनिस्ट आन्दोलन के विस्तार के लिए देखें, आनन्दस्वरूप शर्मा, माओइस्ट मूवमेन्ट इन नेपाल।
38. बर्नर लेवी, नेपाल इन वर्ल्ड पालिटिक्स, पेसीफिक अफेयर्स, भाग-XXX, मार्च 1957, पृ. 243-44
39. वही, पृ. 244
40. डॉ. एस. सी. मिश्र, रायल कूप ऑफ 1960 इन नेपाल, भारतीय इतिहास कांग्रेस 45 वां अधिवेशन, कुरूक्षेत्र, 1982, पृ. 760
41. वही, पृ. 761
42. ल्यू ई. रोज, 'नेपाल स्ट्रेटसी फॉर सरवाईवल' पृ. 228; लल्लन प्रसाद व्यास नेपाल और भारत, धर्मयुग, 18 फरवरी, 1962
43. डॉ. एस. सी. मिश्र, पूर्व उद्धरित, पृ. 761
44. प्रणव बनर्जी, पालिटिक्स ऑफ एडजस्टमेण्ट: नेपाल अण्डर द किंग्स, प्रोब्लम्स ऑफ नान एलाइन्मेट, भाग-1, मार्च-मई 1984, नई दिल्ली, पृ. 105
45. ब्रह्मानन्द मिश्र, जिन्हें रास नहीं आती, भारत और नेपाल की दोस्ती, जनसत्ता, 4 नवम्बर, 1990.
46. लल्लन प्रसाद व्यास, नेपाल और भारत, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 18 फरवरी 1962, पृ. 21
47. हिन्दुस्तान, दैनिक, नई दिल्ली, 16 जनवरी 1965
48. पाञ्चजन्य, लखनऊ, 18 जनवरी 1965
49. दैनिक केसरी, पूना, 16 जनवरी 1965
50. दैनिक, वीर अर्जुन, दिल्ली, 13 जनवरी 1965
51. संसार दैनिक, वाराणसी, 24 जनवरी 1965
52. दैनिक, तरूण भारत, नागपुर, 21 जनवरी 1965
53. मराठी दैनिक, तरूण भारत, पूना, 12 जनवरी 1965
54. उर्दू दैनिक, प्रदीप, जालन्धर, 10, 14, 17 जनवरी 1965
55. नेपाल सन्देश, पटना, 18 जनवरी 1965
56. नेपाली दैनिक, काठमाण्डू
57. इंडियन एक्सप्रेस, दिल्ली, 28 दिसम्बर, काठमाण्डू स्थित पत्र के संवाददाता श्री ए. सी. चन्द्रमोहन का समाचार नो पालिटिकल इम्पोर्ट इन नेपाल किंग्स विजिट।
58. देखें नेपाल की कुछ प्रमुख कम्युनिस्ट पार्टियों के नाम थे जैसे- नेपाल की कम्युनिस्ट (एकीकृत मार्क्सवादी, लेनिनवादी), नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी, लेनिनवादी), नेपाल की साम्यवादी पार्टी (मार्क्सवादी, लेनिनवादी, माओवादी), नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (संयुक्त), नेपाल की कम्युनिस्ट (मशाल), नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (राष्ट्रीय जनमोर्चा), राष्ट्रवादी कम्युनिस्ट लीग, नेपाल जनवादी मोर्चा, नेपाल मजदूर, किसान पार्टी तथा नेपाल कम्युनिस्ट (एकता केन्द्र)।
59. सतीश चन्द्र मित्तल, 'नेपाल में हिन्दुत्व विरोधी कुचक्र', पाञ्चजन्य, 5 अप्रैल 2009
60. वही।
61. ब्रह्मानन्द मिश्र, 'जिन्हें रास नहीं आती भारत और नेपाल की दोस्ती', 4 नवम्बर 1990; चीन के हथियार नेपाल को आ रहे हैं, जनसत्ता, 11 जुलाई 1990.
62. वही
63. वही
64. वही
65. राष्ट्रीय सहारा, 29 दिसम्बर 2001
66. वही
67. द टाइम्स ऑफ इंडिया, 4 फरवरी 2005
68. वही, 3 फरवरी 2005
69. राजीव शुक्ला, 'नेपाल में अशांति का अर्थ', जनसत्ता, फरवरी 2005
70. द टाइम्स ऑफ इंडिया, 13 फरवरी 2005, देखें (उसकी प्रेस कांफ्रेंस)।
71. सिद्धार्थ बन्धु, 'नेपाल : माओ, तसजिद, मिशन और मैकाले पुत्रों के चंगुल में राष्ट्रधर्म', मई 2005, पृ. 61
72. दैनिक जागरण, 13 अप्रैल 2008
73. द टाइम्स ऑफ इंडिया, 25 मई 2008, 29-30 मई 2008.
74. वही, 20 अप्रैल 2008
75. वही, 30 दिसम्बर 2008, 11 जनवरी 2009, 16 मई 2009, राकेश मिश्र, 'पशुपतिनाथ मन्दिर पर प्रचण्ड का आह्वान'; हिन्दू संस्कृति पर माओवादी हमला, पाञ्चजन्य, 18 जनवरी 2009.
76. श्री इन्द्रेश कुमार, नेपाल में बहे लोकतंत्र की बयार, पाञ्चजन्य, 30 मई 2010.
77. देखें, द हिन्दू, चेन्नई, इंडिया, नेपाल एग्री टू स्टार्ट वर्क आन कोशी इम्बैकमेन्ट, 1 दिसम्बर 2008.
78. द राईज ऑफ माओइस्ट इन नेपाल पालिटिक्स : फ्राम पीपुल्सवार टू डेमोक्रेटिक पालिटिक्स, ईस्ट एशिया फोरम।
79. द टाइम्स ऑफ इंडिया, 'सीक्यूरिंग द फ्यूचर एण्ड' मार्च 2010
80. वही
81. कुमार विजय, 'बदहाली के इस मोड़ पर नेपाल', पाञ्चजन्य, 19 जुलाई 2010
82. वही
83. दैनिक जागरण, रहीस सिंह, नेपाल में पैठ बनाता चीन, 20 अक्टूबर 2010.
84. वही
85. वही, इस्टीरपुर ऑफ डिफेंस रिसर्च एण्ड एनालिसिस (अमेरिका विदेश विभाग) की उद्धरित रिपोर्ट।

◆◆◆

प्रकाशन शोध प्रक्रिया का अंतिम और अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण होता है। शोध समाज की मूल्यवान उपलब्धि है। इसे समाज के बीच आना ही चाहिए जिससे समस्त मानवता लाभ उठा सके। प्रकाशन के सीमित अवसर शोध को संकुचित करते हैं।